॥ श्रीः ॥

सर्वेषा मेव दानानां ब्रह्म दानं विशिष्यते

गणेश पूजन

॥ लेखक ॥

* स्वामी *

❀ रघुनाथ शर्म्मा ❀

BY

SWAMI

Raghu Nath Sharma.

इम्पी रियल नेटिव प्रेस देहली मे
बाबू रघुवरदयाल के प्रबन्ध से छपी ॥

मिती चैत्र शुक्ला ७ मंगलवार
सम्वत् १९७२

All rights reserved.

॥ ओ३म् ॥

॥ श्रीगुरुचरण कमलेभ्योनमोनमः ॥

ओ३म् गणा नां त्वा गणपति ँहवामहे, प्रियाणां त्वा, प्रियपति ँहवामहे निधिनांत्वा निधिपति ँहवामहे वशोमम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ यजुर्वेद०॥

भाषार्थ—गणोंमे अर्थात् समूहों मे, पालक स्वामीको आप परमेश्वरको, हम ग्रहण करते हैं, प्रियपदार्थों मे अर्थात् इष्ट मित्रों मे आपको परम मित्र, स्वीकार करते हैं, कोषों मे आप को, निधिपति, स्वीकार करते हैं, हे परमेश्वर सबके निवास स्थान, मेरे सब ओर से जानने वाले हो, मैं आपको गर्भवत् धारण करने वाला जानूं चारों ओर से आप जानने वाले हो, गर्भवत् सबको धारण करने वाले हो ॥ १ ॥

है रोकर यह तरारें उलफ़त तो तुझ से,
कि इतनी यह हो मेरी क़िस्मत तो तुझसे ॥
मेरे जिस्मो जामें हो हरकत तो तुझ से,
उडे मामनी की वह शिरकत तो तुझसे ॥

मिले सिदक़ा होनेकी इज़्ज़त तो तुझसे,
सदा एक रहने की लज़्ज़त तो तुझसे ॥
रफ़ीक़ों मे गर है मुरव्वत तो तुझ से
अज़ीज़ोंमे गर है मोहब्बत तो तुझ से ॥
खजानो मे जो कुछ है दौलत तो तुझसे
अमीरों मे है जाह वो सौलत तो तुझसे ॥
हकीमो मे है इल्मो हिकमत तो तुझ से,
है रौनक जहां या है बरकत तो तुझसे ॥

अवज़रा चौकन्ने होकर सुननेका समय है शुद्धअन्तः करण और सच्चे हृदय वालों से भेद उपासना कभी हो ही नहीं सकेगी जैसे एम. ए. M.A. CLASS केविद्यार्थीका जी मिडिलCLASSवालोंकी पुस्तकों मे लग ही नहीं सक्ता परन्तु हां जो लोग सदाकेलिये निचले दर्जेकी उपासना का पेशा बनालेते हैं वह अनर्थ करते हैं ॥

पूर्वोक्त मन्त्र मे परमपिता परमेश्वरने गणेश अर्थात् गणपतिकी पूजाके विधानका निर्देश सर्वजीवों के प्रति किया है न जाने इसका क्या कारण है, जैसाकि हमारे सनातन धर्म्मावलम्बियों मे प्रचलित है यह प्रथा भारत वर्ष मे सामान्य प्रचरित ही नहीं वरंच प्रत्येक हिन्दु मात्रके शुभ कार्य्यारम्भ होने मे इस मन्त्र से हमारे स-

नातनी पंडित गणेश पूजा करते हैं परन्तु इस गणेश के वास्तविक स्वरूप से अनभिज्ञ जैसे प्रतीत होते हैं क्योंकि अन्य धर्म्मावलम्बियों के यह आक्षेप हैं और सर्वसाधारण मनुष्य भी विस्मित हैं कि गणेश पार्वती का पुत्र रुद्रपिता चतुर्भुजी गजानन लम्बोदर अर्थात् बड़े पेटका मूषक उनका वाहन इत्यादि उपाधि संयुक्त पुराणो मे गणेश वर्णन किया है न जाने इसका क्या कारण है यही नहीं वरंच उमाके मल से अयोनिज उत्पत्ति महादेव के विवाह मे गणेश पूजा का विधान इत्यादिक वार्ता इस्तव्यस्त अर्थात् असम्भव प्रतीत होती है, और जो मन्त्र मे गणपति शब्द आया है वह निराकार निर्विकार निरंजन निरामय सच्चिदानन्दानन्त सर्व शक्तिमान जगद्गुरु सर्व पालक सब देवों के देव महादेव का नाम आया है जैसे गणसंख्याने से गणपति शब्दकी सिद्धि मानते हैं आथात(गणानामीशः गणेशः गणानां पतिः गणपतिः) परन्तु योगी इसको सम्यक् प्रकार से जानते हैं योगकी पुस्तकों मे इस देवका योगी परमेश्वर प्राप्ति होने का प्रथम साधन कथन करते हैं जैसा कि—

आधारं तु चतुर्दलानलसमं वासान्त वर्णाश्रयम् ।

स्वाधिष्ठानमपि प्रभाकरसमं वालान्तषट्पत्रकम् ॥ १ ॥
रक्ताभं मणि पूरकं दशदलं डाद्यं फकारान्तकम् ।
पत्रैः द्वादश भिन्नाहत पुरं हैमं कठान्ता वृतम् ॥२॥
पत्रैः सस्वर षोडशैः शशधर ज्योतिर्विशुद्धाम्बुजम् ।
हंसेत्यक्षर युग्मकं द्वयदलं रक्ताम्भ मात्राम्बुजम् ॥३॥

अर्थ—मूला धार मे कुण्डलिनी देवी सहित गणेश अधिष्टात्रि देवता है यह शिव संहिता हठ योग प्रदीपिका गोरख पद्धति आदि ग्रन्थों मे और कबीर गरीब दासादि महात्माओं ने बड़े उच्च भाव से निम्न लिखित भावानुसार वर्णन किया है जैसाकि एक साधु महात्मा इस भजन मे वर्णन करते हैं:—

जय गणेश गणनाथ दयानिधि सकल विघन कर नाश हमारे ॥टेक॥ प्रथम धरे जो ध्यान तुम्हारो तिस के पूरण कारज सारे ॥ लम्बोदर गज वदन मनोहर कर त्रिशूल परशु वर धारे ॥ ऋद्धि सिद्धि दोउ चँवर डुलावें मूषक शोभित चरण किनारे ॥ ब्रह्मादिक सुर ध्यावत मनमे ऋषि मुनिगण सब दास तुम्हारे ॥ ब्रह्मानन्द सहायकरो नित भक्तजनों के तुम रखवारे ॥ ४ ॥

इसी प्रकार महात्मा कबीर कहते हैं—

मूल कमल दल चतुर बखानो कलिङ्ग जाप लाल रंग मानो, देव गणेश तहां रूपा थाणो ऋद्धि सिद्धि चवँर ढुलारा है ॥

अर्थ–मूल कमल अर्थात् आधार चक्र चार दलका वर्णन किया है कलिङ्ग कि जाप सुखरूप परावाणी यहीं से जानी जाती है इसके ही ध्यान से मनुष्य को अनुभवज्ञान होता है वेदवाणी यहीं से उत्पन्न होती है इसी हेतु से यह कहा है कि 'व-दे वाणी विनायकम्, इस आधार रूपी कमलका मानो रक्त वर्ण है यह समष्टि रूप का आत्मा अर्थात् अधिष्ठाता देव गणेश है इस देवकी ऋद्धि अर्थात सांसारिक चक्रवर्ति राज्य ऐश्वर्य्य सम्पत्ति आदि सिद्धि आणिमादि अष्टासिद्धि पतंजल योगानुसार चवँर ढुलाती हैं इसी हेतुको लेकर गणेश पूजन से अर्थात् वेद वाणी के अधिष्ठान रूपी केन्द्र से परावाणी मे से परिवर्तित हुआ शब्द पश्यन्ति वाणी होता हुआ योगियों के अनुभव गोचर होता है और पराआत्मा का रूप है वहां गुरु अपने आप है जो स्वरूप से प्रेम द्वारा अधिकारी पुरुषों को आकर्षण करते रहते हैं कि इस महल मे अपना प्यारा है जिसकी कि स्वल्प रश्मिकी स्वरूपता षोड़श वर्ष के कुमारों मे

इतस्ततः प्रतीत होती है परन्तु तुम अपने प्यारेको इन नेत्रों से जभी देख सक्ते हो जब इन चार शत्रुओं को नितान्त छोड़दो वे ये हैं प्रथम काम बुरी कामना जैसा कि महात्मा कबीरजी कहते हैं, काम काम सबको कहै काम न जाने कोय, जेतीमनकी कामना काम कहावें सोय ॥ स्त्री प्रसंग की इच्छाको काम कहते हैं इस मे सर्व सहमत हैं यह सर्व पापों की जड़ है जैसा कि भगवान् ने श्रीमद्भगवद्गीता मे कहा है ॥

काम एष क्रोध एष रजोगुण समुद्भवः ।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येन मिह वैरिणम् ॥

अर्थः—कामऔर क्रोध रजोगुण से उत्पन्न होते हैं यह सब पापोंकी जड़ इस जीवको जन्म मरण रूपी दुःख देने वाले जानः—

धूमे ना ब्रियते वन्हिर्यथाऽऽदर्शो मलेनच ।
यथोल्वे ना वृतो गर्भस्तथा तेनेद मावृम् ॥

अर्थ—धूमेन-वन्हिः-आब्रियते, जिस प्रकार धूम्र से अग्नि ढकी हुई होती है, च-यथा-आदर्शः-मलेन,-और जैसे दर्पण मल से आच्छादित होता है, यथा उर्वेन

गर्भः, इसी प्रकार जेर से गर्भ अर्थात् बच्चा(आवृतं)ढका हुआ है, तथा. तेन. इदं, उसी प्रकार उस काम से यह गणेश रूपी देवता और परा वाणीका आधार अनन्त सच्चिदानंद स्वरूप अपना आप (आवृतं) ढका हुआ है, पाप्मानं जहिह्येनं ज्ञान विज्ञान नाशनम्। हे अर्जुन ! इस ज्ञान विज्ञान के नाश करने वाले पापी को निश्चय कर के जीतो तीसरी अध्याय के अन्त मे जगद्गुरु भगवान् यही कहते हैं, जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् । हे लंबी भुजाओं वाले अर्जुन कामरूपी दुर्धर्ष शत्रु को जीतो यही अविनाशी योग पूर्व मैंने वैवस्वत् को कहाथा व्यवस्वान्ने मनुसे कहा मनुने ईक्ष्वाकुको कहा कामका जीतना ही योगकी सिद्धिका महत् हेतु है यदि हम काम लोक के सर्व तत्वोंको सम्यक् प्रकार से न भी जानतेहों परन्तु यह अवश्यमेव मानना पड़ता है कि एक काम ही है जोविष्णुका एकलौता बेटा है जो प्रवृति मार्ग मे अत्यन्त आवश्यक है परन्तु निवृति मार्ग मे वहमहा विघ्नप्रतीतहोता है इसके क्षय और वश करने केलिये काम रिपू शिव शंकर महादेव की शरण मे जाना पड़ता है क्योंकि वेही निवृत्ति मार्ग के नेता हैं उनके मस्तक पर द्वितीयका चन्द्रमा यह सूचित करता है कि अब अन्धकार मय पक्ष नष्ट हुई आओ दोजका चांद देखो इसी प्रकार परमेश्वर की ओर बढो

जिस प्रकार औषधेश्वर क्रमशः वृद्धिको प्राप्त होता है ऊपर चढ़ने मे कठिनताओं के कारण मन्द गति होती है इसी लिये मन्द गति करने वाला इनका वाहन बैल है यह नन्दी गण मृत्यु के मुखसे विरूपाक्ष ने प्रमोचन किया जबसे इनको प्रत्येक स्थान पर वाहन का कार्य देने लगा और प्रवाहक शक्तियों मे कृत कार्यता लाभकी यह समष्टि ब्रह्माण्डका मन है इस पर काम ऋपु शिव आरूढ होते हैं तब इसके जन्म मरणका मूल उच्छेद होकर परमानन्द अनन्त की प्राप्ति त्रिविधा दुःखकी अत्यन्त निवृत्ति अर्थात् अभाव होजाता है यही सर्व शास्त्र और सर्व मतोंका सिद्धान्त सार भौम धर्म है जिसको नजान इन्द्र चन्द्र ब्रह्मा आदि ऋषि स्त्री रूपी माया के जाल मे फंसकर कपोतों की सदृश अधः पतन होकर क्लेशित और व्यथित हुए राज राजेश्वर सम्राट् रेणुकणो मे अर्थात् धूली मे रुलगए परन्तु पवित्र भूमि आर्यवर्त भारत के सूर्य श्रीपरशुराम रामचन्द्र रघुलक्ष्मण भरद्वाज मेघनाद महावीर श्रीयुत हनूमान गुडाकेश धर्म दिवाकर राज ऋषि श्रीभीष्मपेता मह जैसे होचुके हैं, जिन्होंने काम देव को संसार रूपी रण भूमि मे पराजितकर देशसे निकालकर ब्रह्मचर्यका इष्ट ईश्वरीय ज्ञान अनुभव अर्थात् वेद वाणी का नाद सर्व दिशों मे घो-

पित कर दिया ऐसे ही पुरुष गणेश के वास्तविकतत्वको जान सक्ते हैं वे सब जीवों मे गणपतिको बुलाते हैं पूजते हैं मानते हैं प्रिय पदार्थों मे इष्ट मित्रों मे विद्या आदि रत्नादिके कोशों मे सब मे और सब को धारण करने वाला उसी गणेश विघ्न विनाशक ज्योतिः स्वरूप को मानते हैं तथा च श्रुतिः, एक मेवा द्वितीयं ब्रह्म, सर्वं खल्विदं ब्रह्म नेह नानास्ति किंचन। मृत्युंच मृत्युं गच्छति इह नानेव पश्यति ? अर्थ–एक अद्वितीय तत्व है निश्चय करके सर्व ही यह ब्रह्म है, मृत्यु से वह मृत्यु को प्राप्त होता है जो यह नाना भिन्न भाव देखता है, संक्षेपतः तात्पर्य यह है कि गुदा और लिंगके मध्य मे सूक्ष्मस्नायु परस्पर मिलती हुई स्थूल शिराओं से सम्बन्धित संघात को प्राप्त हुई हैं वहां एक कमलका सा आकार बनगई हैं इस से कतिपय दूरी पर अण्ड कोष के भागों के ऊपर कामदेवका वासा है इस के अधः मज्जा तन्तु मूषक के आकार को धारण किये हुए हैं यहां का प्रकाश कई सूर्य और चन्द्र के समान योगी वर्णन करते हैं यह प्रकाश शिराओं मे मूर्तिमान जैसा बनगया है चार दलों मे चतुर्भुज त्रिकोण योनि की ओर उदर के सदृश नाड़ी योनिके मध्य मे ग्रथित है सिद्धासन द्वारा वाम पादकी एडी द्वारा योनि

पीड़ित की जाती है और ग्रीवा उग्र और सम शरीर अर्थात् सीधा बैठकर आज्ञा चक्र मे भृकुटियों के मध्य जब ध्यान किया जाता है तब शिवाग्नि मे ज्ञान रूपी अग्नि प्रज्वलित होजाती है तब ब्रह्म रन्ध्र मे से अमृत झरने लगता है और अशुद्ध मलकफ पिघल कर नेत्र और नासिका द्वारा झरने लगता है और गजमुखकी आकृति होने का यह कारण है कि जिस मे मूलाधार का प्रकाश अधिष्टान रूप से वर्तमान है वहां शब्द उत्पादक नाड़ियें इसी प्रकार विद्यमान हैं यह गणेशलोक अर्थात् गणेश देवता महान् पवित्र मूलाधार की नाड़ियों द्वारा ही दृष्टि गोचर होता है जिस प्रकार शरीरस्थ सूक्ष्म जीव खुर्दबीन अर्थात् सूक्ष्म वीक्षण द्वारा देखे जासक्ते हैं इन की माता भी गौरी उमा पार्वती आदि माना है गौरी वेद वाणी का नाम निघण्टु मे आया है उमा परमेश्वर को प्रकाशित करने वाली बुद्धिका नाम तलव कार मे कथन किया है इसीसे विद्वान् पुरुष जान सक्ते हैं कि इस देव के पूजने से और ध्यान से विघ्ननाश हो सक्ते हैं और कोई प्रकार नहीं ॥ इति ॥

॥ गणेश पूजनं समाप्तम् ॥

प्रकाशकः—लाला महतावराय चूहामल सेठ देहली

शरीर
मध्य
रूपी
अमृत
व और
आकृति
का प्र-
त्पादक
अर्थात्
यों द्वारा
थ सूक्ष्म
जासक्ते
माना है
है उमा
ाम तलव
जान सक्ते
विघ्ननाश
ति ॥

ुठ देहली

॥ ओ३म् ॥

❀ सूचना ❀

सर्व सज्जन सत्य विद्यानुरागी पुरुषों की सेवा में यह निवेदन है कि यहां से ज्ञान भक्ति वैराग्य और योग से परिपूरित तथा गाने वाले भजनों की ये पुस्तकें प्राप्त होसक्ती हैं सो सर्व सज्जन मंगाकर अवश्य ही अलभ्य लाभ उठावेंः—

ओङ्कार व्याख्या, प्रातः स्मरणम्, गायत्र्यर्थ प्रकाशिका, भक्ति मार्ग, सत्य शब्द संग्रह, बालशिक्षा।

पता—रघुनाथ स्वामी
स्वामी पुस्तकालय नरेला
ज़िला देहली